विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 14 | अंक : 53 | मार्च , 2021

विश्व हिंदी दिवस 2021

विश्व हिंदी दिवस 2021 के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस वर्ष विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सहित भारत, श्रीलंका, जर्मनी, लंदन, न्यू यॉर्क, सिंगापुर, थाईलैंड, कनाडा, त्रिनिदाद एवं टोबेगो, बीजिंग, वेनेज़ुएला आदि देशों में हिंदी की धूम मची। विश्व हिंदी दिवस की गतिविधियों की रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ. 2-6

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

11 जनवरी, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया।

पृ. 2-3

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का 13 वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

11 फ़रवरी, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में अपना 13 वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस मनाया।

पृ. 6-7

फ़णीश्वरनाथ रेणु की जन्मशतवार्षिकी पर आयोजित संगोष्ठी

18 जनवरी, 2021 को साहित्य अकादेमी द्वारा फ़णीश्वरनाथ रेणु की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई आलोचकों ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए फ़णीश्वरनाथ रेणु पर अपने विचार व्यक्त किए।

पृ. 7-8

'घरेलू हिंसा : एक अपराध' का लोकार्पण

17 मार्च, 2021 को गुजरात भवन, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली के सभागार में डॉ. राजुल देसाई द्वारा लिखी गई पुस्तक 'घरेलू हिंसा एक अपराध' का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री सी.आर पाटिल और विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती रेखा शर्मा उपस्थित थी।

पृ. 13

अंतरराष्ट्रीय वातायन सम्मान समारोह

20 मार्च, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में आभासी मंच पर वातायन के अंतरराष्ट्रीय वार्षिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के अंतर्गत प्रख्यात लेखिका और विस्कांसिन विश्वविद्यालय-मैडीसन में दक्षिण-एशियाई विभाग की प्रोफ़ेसर रह चुकी प्रतिष्ठित लेखिका श्रीमती उषा प्रियंवदा को 'वातायन शिखर सम्मान' (लाइफ़-टाइम अचीवमेंट) और जानी-मानी उद्घोषिका और लोकप्रिय लेखिका डॉ. अलका सिन्हा को 'अंतरराष्ट्रीय वातायन साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

पृ. 14-15

प्रो. वशिनी शर्मा का निधन

2 जनवरी, 2021 को सौम्य, शालीन और हिंदी के प्रति समर्पित और निष्ठावान विदुषी प्रो. वशिनी शर्मा का 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 20 नवंबर, 1944 को हल्लीखेड, कर्नाटक में हुआ था। आप अध्यापन के क्षेत्र में लगभग 40 वर्षों से कार्यरत थीं तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की पूर्व प्रोफ़ेसर रह चुकी हैं।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

संगोष्ठी/वेबिनार/ऑनलाइन गोष्ठी/जयंती पृ. 7-13
लोकार्पण पृ. 13-14
पुरस्कार एवं सम्मान पृ. 14-15
श्रद्धांजलि पृ. 15
संपादकीय पृ. 16

ISSN 16942485

विश्व हिंदी दिवस 2021

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

11 जनवरी, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया। समारोह का आरंभ दीप-प्रज्वलन एवं मॉरीशस तथा भारत के राष्ट्र-गान से हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन, जी.सी,एस.के. रहे। इस अवसर पर विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री माननीय श्री नंदकुमार बोधा, भूमि परिवहन और लाइट रेल मंत्री माननीय श्री आलान गानू तथा भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती नंदिनी के. सिंग्ला ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कोरोना महामारी के चलते सचिवालय द्वारा इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर बीज-वक्ता के रूप में मास्को राज्य अंतरराष्ट्रीय संबंध विश्वविद्यालय, रूस की प्राध्यापिका, डॉ. सफ़र्मो तोलीबी द्वारा वीडियो रिकॉर्डिंग की प्रस्तुति की गई।

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन ने सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने अपने वक्तव्य में मॉरीशस में हिंदी के वैश्विक स्वरूप को उभारने में विभिन्न संस्थाओं के निरंतर सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया तथा युवकों से अपनी भाषा पढ़ने और बोलने का निवेदन किया।

इस अवसर पर भारत गणराज्य के शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा वीडियो की प्रस्तुति की गई। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी विचार प्रवाह है तथा उसका हर एक शब्द जीवंत है। उन्होंने बताया कि मॉरीशस की सांस्कृतिकता भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत है तथा मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हिंदी के प्रति मॉरीशस का लगाव दर्शाता है।

मॉरीशस में नवनियुक्त भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती नंदिनी के. सिंग्ला ने इस अवसर पर भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। अपने उद्बोधन में महामहिम ने कहा कि हिंदी समस्त भारत में एक संपर्क भाषा बन गई है। उन्होंने हिंदी की प्रगति में मॉरीशसीय साहित्यकारों के योगदान को सराहा। साथ-साथ उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय तथा विभिन्न संस्थाओं के सहयोग की सराहना की। उन्होंने बताया कि इस बदलते समय में नई सोच तथा नए प्रयासों की आवश्यकता है, जो विश्व हिंदी सचिवालय और विश्व को और निकट लाए।

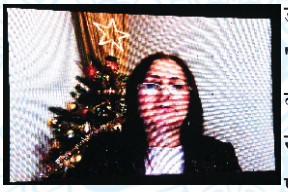

डॉ. सफ़र्मो तोलीबी ने 'रूस में हिंदी-शिक्षण की स्थिति एवं संभावनाएँ' विषय पर वक्तव्य देते हुए वहाँ के विभिन्न विद्वानों द्वारा हिंदी-शिक्षण के प्रति योगदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि रूस के विश्वविद्यालयों में हिंदी की रक्षा को खास प्राथमिकता दी जाती है।

समारोह के आरंभ में सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित महानुभावों व सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा पिछले एक वर्ष में सचिवालय की उपलब्धियों व गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। उन्होंने सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की।

मंच-संचालन विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी पत्रिका के 12 वें अंक का लोकार्पण

इस वर्ष सचिवालय ने 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 12 वें अंक (मुद्रित व इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप) का लोकार्पण किया। इस अंक में विश्व के विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों एवं लेखकों द्वारा प्रणीत 37 ज्ञानवर्धक आलेख सम्मिलित किए गए हैं, जो हिंदी उद्भव एवं विकास, लिपि, साहित्य और संस्कृति, हिंदी का ई-संसार और जन-माध्यम, हिंदी-शिक्षण, हिंदी के विविध आयाम, हिंदी के पथप्रदर्शक तथा हिंदी के क्षेत्र में आज के प्रश्न से संबंधित हैं। यह अंक सचिवालय के वेबसाइट पर उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2021 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2020 में 'अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया था। 5 भौगोलिक क्षेत्रों से कुल 84 लोगों ने भाग लिया। समारोह में मॉरीशस के तीन विजेताओं (प्रथम पुरस्कार - सुश्री चांदनी रामधनी; द्वितीय पुरस्कार - श्रीमती बिद्वंती शम्भु; तृतीय पुरस्कार - सुश्री प्रेरणा आर्यनायक) तथा एक भारतीय विजेता (तृतीय पुरस्कार - श्री धर्मेंद्र कुमार सिंह) को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भेंट किए गए। प्रतियोगिता का परिणाम सचिवालय के वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

इस वर्ष वाक्का रंग भूमि कला मंदिर द्वारा 'शकुंतला' नाटक को विश्व हिंदी दिवस के मंच पर प्रस्तुत किया गया। 'शकुंतला' नाटक महाकवि कालिदास कृत विश्वविख्यात नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' से प्रेरित है। इसमें राजा दुष्यंत तथा शकुंतला के प्रणय, विवाह, विरह, प्रत्याख्यान तथा पुनर्मिलन की कहानी है। नाटक को राजेश्वर सितोहल, साक्षी जीआन, जिज्ञासा देवी गणेश, वीर दिलीप शाह, शमिधा दाऊ, हुशिला देवी रिसोल, योगेश्वरी रामचरण, विदुषी बातु, सुगंधा दाऊ, लिनिशा देबिदोयाल, संजना लोतुआ, धर्मा सितोहल, जयवेश जद्दू, राजीव सितोहल, देयांशी सितोहल, मृणाल घुराऊ, गिरीशा गणेश, मिष्ठा रानी सिबालक, हाश्ना ठाकुरी तथा तुशिता मुचुराम ने प्रस्तुत किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

भारत

नई दिल्ली

भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा 11 जनवरी, 2021 को नई दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू भवन के प्रांगण में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विदेश राज्य मंत्री माननीय श्री वी. मुरलीधरन तथा विशिष्ट अतिथि गृह राज्य मंत्री माननीय श्री नित्यानंद राय रहे। अन्य प्रतिभागियों में विदेश मंत्रालय के अधिकारी, पासपोर्ट अधिकारी, मीडिया कर्मी आदि भी शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व सचिव श्रीमती रीवा गांगूलीदास द्वारा माननीय गृह राज्य मंत्री एवं विदेश राज्य मंत्री का पुष्प-गुच्छ से स्वागत द्वारा हुआ। साथ ही अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्वलन भी हुआ।

समारोह के अंत में मंत्रालय द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। श्रीमती सुजाता ने समारोह का संचालन किया और धन्यवाद-ज्ञापन संयुक्त सचिव श्री कुरुप ने किया।

साभार : विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

देहरादून, उत्तराखंड

12 जनवरी, 2021 को ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन, देहरादून के मुख्यालय में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया, जिसके दौरान पाँच साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि ओ.एन.जी.सी. समूह महाप्रबंधक के प्रधान श्री विपुल कुमार जैन और विशिष्ट अतिथि श्री रजनीश त्रिवेदी रहे। राजभाषा विभाग के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में श्री विपुल कुमार जैन ने सुप्रसिद्ध कहानीकार डॉ. जितेन ठाकुर, प्रतिष्ठित गीतकार डॉ. राम विनय सिंह, साहित्यकार और 'बीरा' की संपादक श्रीमती कुसुम नौटियाल, सुपरिचित कवि श्री शिवमोहन सिंह और नवोदित कवयित्री श्रीमती पल्लवी रस्तोगी को सम्मानित किया। इस अवसर पर ओ.एन.जी.सी. मुख्यालय की राजभाषा पत्रिका 'सहस्रधारा' का भी विमोचन किया गया। इस दौरान साहित्यकारों और कवियों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मधुलिका श्रीवास्तव ने किया।

साभार : संजीवनी टुडे

हैदराबाद

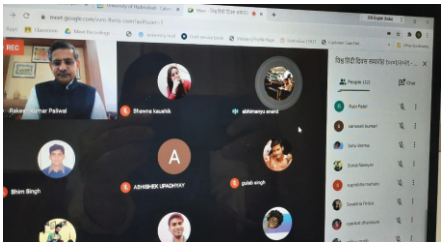

10 जनवरी, 2021 को हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा विश्व हिंदी दिवस समारोह का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर एक परिचर्चा आयोजित की गई, जिसके मुख्य वक्ता हिंदी के सुपरिचित लेखक, चिंतक एवं भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. राकेश कुमार पालीवाल रहे। उन्होंने हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रचारित-प्रसारित कर उसे सम्मानित करने की बात कही। साथ ही उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिंदी के योगदान पर भी चर्चा की और हिंदी के प्रचार-प्रसार में गांधी की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डाला। समारोह में कई प्राध्यापकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन और धन्यवाद-ज्ञापन शोध-छात्र प्रतिनिधि सेतु कुमार वर्मा ने किया।

इंदौर

10 जनवरी, 2021 को श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के सभागार, इंदौर में राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश शासन की पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री माननीया सुश्री उषा ठाकुर उपस्थित थीं एवं अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री कृष्ण कुमार अस्थाना ने की। इस अवसर पर संस्था की वार्षिक पत्रिका 'नव वैचारिकी' का लोकार्पण भी संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में 5 साहित्यकारों - इंदौर से श्रीमती आर्यमा सान्याल एवं श्री अनिल ओझा, रायपुर से श्रीमती मुक्ता कौशिक, धमतरी से डॉ.

आशीष कुमार नायक तथा नागदा से श्री कमलेश दवे को 'अटल काव्यश्री सम्मान' से विभूषित किया गया। संचालन हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री हरेराम वाजपेई ने किया एवं अंत में आभार संस्था के उपाध्यक्ष डॉक्टर जी.डी. अग्रवाल ने व्यक्त किया।

साभार : बी.के.के. न्यूज़ ब्लॉग

पूर्णियाँ, बिहार

10 जनवरी, 2021 को कला भवन नाट्य विभाग, पूर्णियाँ, बिहार में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी पर चर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रेणु रंगमंच के सचिव श्री अजित सिंह बप्पा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसमें संस्कृति, कला और संस्कार देखने को मिलता है। रंगकर्मी अंजनी श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी भाषा छोटों और बड़ों के बीच प्रेम और आदर्श सहित सम्मान को दर्शाता है। कला भवन नाट्य विभाग के सचिव-सह-संयोजक श्री विश्वजीत कुमार सिंह ने कहा कि विदेशों में भी हिंदी भाषा का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जबकि आज हम अपनी संस्कृति और संस्कार सिखाने वाली भाषा हिंदी को ही भूलते जा रहे हैं। रंगकर्मी शिवाजी राव ने कहा हिंदी हमारी मातृभाषा है, हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिससे हमें देवत्व की अनुभूति होती है। नाट्य विभाग के निर्देशक श्री कुंदन कुमार सिंह ने हिंदी दिवस की महत्ता पर अपने विचार रखे। श्री मयंक रोनी ने कहा कि पंजाबी होने के बावजूद मुझे हिंदी भाषा से बहुत ज़्यादा लगाव है। इस अवसर पर उपस्थित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए और हिंदी के प्रचार-प्रसार पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन रंगकर्मी अंजनी श्रीवास्तव ने किया।

साभार : अंग इंडिया न्यूज़.कॉम

विश्व भर में

श्रीलंका

10 जनवरी, 2021 को स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय उच्चायोग, श्रीलंका की सांस्कृतिक शाखा द्वारा कई कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के माध्यम से विश्व हिंदी दिवस वर्चुअल रूप में मनाया गया। इन गतिविधियों का उद्देश्य हिंदी को बढ़ावा देने के साथ-साथ श्रीलंका में हिंदी के प्रति उत्साही लोगों को हिंदी में अपनी साहित्यिक और भाषाई प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना था। इस उपलक्ष्य में हिंदी वीडियो संदेश प्रतियोगिता, हिंदी कहानी-पठन प्रतियोगिता और हिंदी कविता-पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसमें 317 लोगों ने भाग लिया।

साभार : भारतीय दूतावास, कोलंबो, श्री लंका का फ़ेसबुक पृष्ठ

कैंडी, श्रीलंका

12 जनवरी, 2021 को महावेली रीच होटल, कैंडी में सहायक भारतीय उच्चायोग, कैंडी द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह के दौरान भारतीय उपउच्चायुक्त श्री राकेश नटराज ने प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा, जिसके बाद उपस्थित अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने हेतु लगभग 40 हिंदी प्रेमियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। साथ ही आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साभार : सहायक भारतीय उच्चायोग, कैंडी का वेबसाइट

हैम्बर्ग, जर्मनी

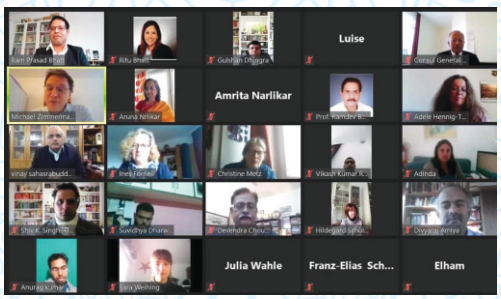

10 जनवरी, 2021 को हैम्बर्ग के भारतीय महावाणिज्य दूतावास तथा हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के इंडोलॉजी विभाग के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस का एक आभासी उत्सव आयोजित किया गया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष और संसद के सदस्य डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धि मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। बौद्ध अध्ययन विभाग के प्रमुख प्रोफ़ेसर डॉ. माइकल ज़िम्मरमैन ने स्वागत-भाषण दिया। समारोह के दौरान सरस्वती वंदना की गई और भारतीय प्रधानमंत्री का संदेश पढ़ा गया। महावाणिज्य दूत महामहिम जॉन एच. रूंगुलुल ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए आज की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के प्रमुख प्रतिभागियों में माननीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय से प्रो. रामदेव भारद्वाज, भारतीय अध्ययन केंद्र, लिस्बन विश्वविद्यालय से प्रो. शिव कुमार सिंह, दैनिक जागरण के एसोसिएट एडिटर, श्री अनंत विजय और लेखक/पत्रकार डॉ. अरुणा नार्लीकर सहित अन्य शिक्षाविद् और भारतीय प्रवासी थे। कार्यक्रम में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, लीपज़िग विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑव ट्यूनिंग और लिस्बन विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुतियाँ भी हुईं।

साभार : भारतीय दूतावास, जर्मनी का फ़ेसबुक पृष्ठ

लंदन

10 जनवरी, 2021 को भारतीय उच्चायोग, लंदन द्वारा विश्व हिंदी दिवस का ऑनलाइन आयोजन किया गया, जिसमें लंदन स्थित अनेक साहित्यकार और ब्रिटेन में मंदिरों और अन्य हिंदी शिक्षण केंद्रों में हिंदी सीख रहे बच्चों ने भाग लिया।

इस अवसर पर उपउच्चायुक्त श्री चरणजीत सिंह ने माननीय प्रधानमंत्री का संदेश पढ़ा। उन्होंने अपने उद्बोधन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी के प्रति कटिबद्ध सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया और संतुष्टि व्यक्त की कि वहाँ कई कठिनाइयों के बावजूद बच्चे हिंदी सीखने के प्रति बहुत उत्साहित हैं। कथा यू.के. के अध्यक्ष श्री तेजेंद्र शर्मा ने अपनी बात रखते हुए ब्रिटेन में हिंदी के इतिहास पर बात की। कार्यक्रम के दौरान ब्रिटेन में हिंदी सीखनेवाले बच्चों द्वारा काव्य-पाठ हुआ। कार्यक्रम का

संचालन और धन्यवाद-ज्ञापन श्री संजय कुमार ने किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन का फ़ेसबुक पृष्ठ

न्यू यॉर्क

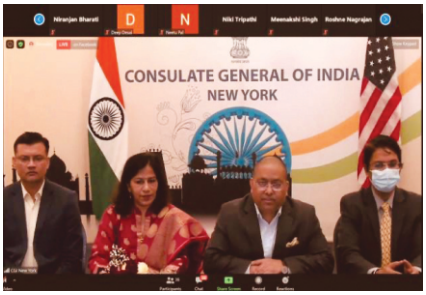

16 जनवरी, 2021 को भारतीय दूतावास, न्यू यॉर्क तथा 'झिलमिल यू.एस.ए.' द्वारा भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में भाग ले रहे 5 से 15 वर्ष के बच्चों ने हिंदी भाषा कौशल का प्रदर्शन करते हुए व्यक्तिगत उपाख्यान, कविता और कहानी पाठ, श्लोक गान आदि प्रस्तुत किए।

साभार : हिंदी अकादमी.ऑर्ग

सिंगापुर

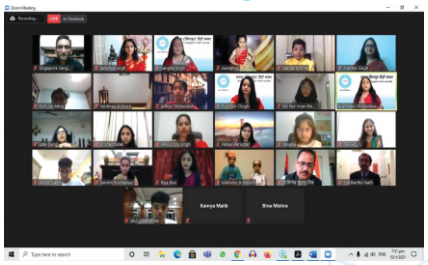

10 जनवरी, 2021 को सिंगापुर संगम द्वारा आभासी मंच पर विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सिंगापुर स्थित भारतीय उच्चायोग के उपउच्चायुक्त श्री सिद्धार्थ नाथ तथा विशिष्ट अतिथि विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र रहे।

श्री सिद्धार्थ नाथ ने भारतीय प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा और कार्यक्रम से जुड़े छात्रों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने सिंगापुर के विभिन्न हिंदी संस्थाओं का उल्लेख करते हुए हिंदी के प्रति उनके कार्यों की भी सराहना की।

प्रो. मिश्र ने कहा कि हर दिवस को हिंदी दिवस के रूप में मनाना चाहिए। उन्होंने विश्व हिंदी दिवस मनाने के इतिहास को उजागर किया जो कि प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से आरंभ हुआ था और हिंदी भाषा की उपयोगिता पर भी बल दिया। इस अवसर पर छात्रों द्वारा प्रश्नोत्तर, गीत प्रस्तुति तथा परिचर्चा हुई। साथ-साथ हिंदी शिक्षकों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए। मंच-संचालन श्रीमती आराधना श्रीवास्तव ने किया।

साभार : सिंगापुर संगम का फ़ेसबुक पृष्ठ

बैंकॉक, थाईलैंड

20 फ़रवरी, 2021 को भारतीय दूतावास, बैंकॉक, थाईलैंड में थाई-भारत कल्चरल लॉज द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी विद्यार्थियों व विद्वानों द्वारा प्रस्तुतियाँ हुईं।

साभार : भारतीय दूतावास, बैंकॉक, थाईलैंड का फ़ेसबुक पृष्ठ

टोरोंटो, कनाडा

10 जनवरी, 2021 को टोरोंटो स्थित दूतावास, हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा और साहित्यकुंज डॉट कॉम द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'फ़िजी के हिंदी साहित्य' नामक विशेष अंक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में कई हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया।

साभार : भारतीय दूतावास, टोरोंटो का फ़ेसबुक पृष्ठ

त्रिनिदाद एवं टोबेगो

16 जनवरी, 2021 को माउंट होप में स्थित महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान, पोर्ट ऑव स्पेन, त्रिनिदाद एवं टोबेगो में विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबेगो के द्वितीय सचिव श्री एम. सी. भगत ने भारतीय प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा। भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अरुण कुमार साहू ने त्रिनिदाद एवं टोबेगो में हिंदी में किए जा रहे कार्यों पर बात की। मेयर श्री जुनिया रिग्रेलो ने हिंदी को मानव सभ्यता में एक आधारशिला बताया।

इस अवसर पर त्रिनिदाद एवं टोबेगो में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में किए जा रहे कार्यों पर एक वीडियो प्रस्तुति, संस्थान के शिक्षकों द्वारा मुखर प्रस्तुतियाँ, नृत्य तथा कविता-पाठ हुआ। धन्यवाद-ज्ञापन श्री रेनतला श्रीनिवास ने किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, पोर्ट ऑव स्पेन का फ़ेसबुक पृष्ठ

बीजिंग

20 मार्च, 2021 को भारतीय दूतावास, बीजिंग ने भारत के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया। राजदूत महामहिम श्री विक्रम मिसरी ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा। उन्होंने कहा कि हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और विश्व हिंदी दिवस हिंदी को बढ़ावा देने और वैश्विक स्तर पर इसकी लोकप्रियता का जश्न मनाने का एक अवसर है।

हिंदी के प्रसिद्ध चीनी विशेषज्ञ और चीन में हिंदी को बढ़ावा देने वाले प्रो. ज्यांग जिंगकुई ने प्रसार भारती, बीजिंग को बताया कि भारत से संबंधित विशेष रूप से हिंदी अध्ययन के लिए पेकिंग यूनिवर्सिटी और शेनचेन यूनिवर्सिटी में मौजूदा दो केंद्रों के अलावा राष्ट्रीय स्तर के 4 केंद्र स्थापित करने के प्रयास चल रहे हैं। समारोह में विभिन्न चीनी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ने वाले चीनी छात्रों, उनके हिंदी शिक्षकों और बीजिंग में भारतीय समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया।

साभार : आकाशवाणी समाचार.कॉम

फ़्रेंकफ़र्ट, जर्मनी

10 जनवरी, 2021 को भारत के प्रधान कौंसलावास, फ़्रेंकफ़र्ट में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधान कौंसल डॉ. अमित तेलंग ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा तथा अपने वक्तव्य में जर्मनी में रह रहे सभी हिंदी भाषी लोगों को शुभकामनाएँ दीं और उनसे हिंदी के प्रचार-प्रसार में मिल रही सहायता के लिए उनका धन्यवाद किया। समारोह के अंतर्गत हिंदी कविता और हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं तथा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

साभार : प्रधान कौंसलावास, फ़्रेंकफ़र्ट, जर्मनी

काराकास, वेनेज़ुएला

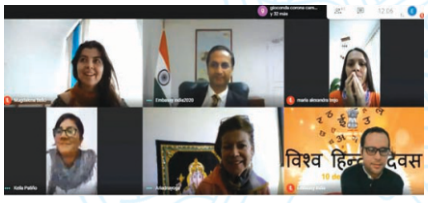

10 जनवरी, 2021 को भारतीय राजदूतावास, काराकास द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत राजदूत महामहिम श्री अभिषेक सिंह के भाषण तथा उनके द्वारा माननीय प्रधानमंत्री जी के विश्व हिंदी दिवस पर संदेश को पढ़ने के साथ हुई। इस अवसर पर वेनेज़ुएलन प्रतिभागियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया और कार्यक्रम के दौरान हिंदी विद्यार्थियों द्वारा अपने हिंदी ज्ञान के सूक्ष्म प्रदर्शनों में हिंदी कविताओं, मंत्रों, आपसी हिंदी संवाद एवं गीतों आदि को प्रस्तुत किया गया। प्रतिभागियों को भविष्य में भी हिंदी के प्रति अपनी रुचि को तथा हिंदी के प्रयोग को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा आगे भी हिंदी कक्षाओं को जारी रखने और हिंदी कार्यक्रमों को आयोजित करते रहने का आश्वासन दिया गया।

साभार : भारतीय राजदूतावास, काराकास, वेनेज़ुएला

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का 13 वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

11 फ़रवरी, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में अपना 13वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस मनाया।

इस अवसर पर मॉरीशस की भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय से वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी श्री रवि मितुक ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस वर्ष मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान से आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पाण्डेय को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

समारोह का आरंभ महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला तथा विश्व हिंदी सचिवालय में कार्यक्रम व गतिविधि उपसमिति की सदस्याएँ श्रीमती अनुपमा चमन और श्रीमती सुनीता पाहूजा द्वारा दीप-प्रज्वलन तथा स्वरागिनी स्पिरिचुअल ऑर्केस्ट्रा के कलाकारों द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ।

महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला ने इस अवसर पर सभागार को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व हिंदी सचिवालय की नींव भारत और मॉरीशस के मज़बूत द्विपक्षीय संबंधों पर टिकी है। उन्होंने बताया कि मॉरीशस के स्कूलों में हिंदी का पठन-पाठन हिंदी की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

महामहिम ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने हेतु सचिवालय को निम्नलिखित सुझाव दिए :

1. सचिवालय की गतिविधियों को युवा पीढ़ी से जोड़ा जाए।
2. स्कूल और कॉलिज के छात्रों के लिए हिंदी में प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ और विजेताओं को मंचों पर पुरस्कृत किया जाए तथा रचनाएँ सचिवालय की पत्रिकाओं में प्रकाशित की जाएँ।
3. मॉरीशस की स्थानीय फ़्रेंच, अंग्रेज़ी और क्रियोल कहानियों का हिंदी में अनुवाद किया जाए।
4. विश्व हिंदी सचिवालय के ग्रंथालय एवं मॉरीशस के सभी पुस्तकालयों के लिए भारत से लोकप्रिय अमर चित्र कथा की पुस्तकें मंगवाएँ।
5. सचिवालय में मल्टीमीडिया लैब का भरपूर प्रयोग करें, जो युवा पीढ़ी के लिए मुख्य आकर्षण है। वरिष्ठ साहित्यकारों के लिए भी ऑनलाइन वीडियो बनवा सकते हैं, जो सोशल मीडिया पर अपलोड किए जा सकें।

6. सचिवालय के वेबसाइट की भाँति सोशल मीडिया एप्स जैसे ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि को संवादात्मक और ज्ञानवर्धक बनाएँ।
7. सचिवालय प्रसार भारती के संयुक्त सहयोग से योजनाएँ बनाएँ, जिनसे मॉरीशस और भारत के बीच हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों का आदान-प्रदान किया जा सके।
8. सचिवालय में कम-से-कम महीने में दो बार मूवी नाइट्स आयोजित करें तथा स्कूलों और कॉलिजों में भी मूवी शोज़ कराएँ, ताकि लोग हिंदी पर अपनी पकड़ बना सकें।

महामहिम भारतीय उच्चायुक्त ने मॉरीशस के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक संगठनों से अनुरोध किया कि वे विश्व हिंदी सचिवालय के साथ मिलकर नई योजनाएँ बनाएँ।

वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी श्री रवि मितुक ने इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों को संबोधित करते हुए सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ दिवस की शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। उन्होंने बताया कि विश्व हिंदी सचिवालय एक आदर्श मंच प्रदान करता है, जहाँ हिंदी भाषा और उसकी प्रतिष्ठा को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्रदान किया जाता है। उन्होंने भारत सरकार और मॉरीशस सरकार के बीच मौजूद द्विपक्षीय संबंध से हिंदी के वैश्विक स्तर पर प्रचार पर संतुष्टि जताई। उन्होंने कहा कि "हिंदी भाषा तथा अन्य एशियाई व पूर्वी भाषाएँ निःसंदेह मंत्रालय की मुख्य और प्रमुख तत्काल कार्यों में से एक है।" उन्होंने हिंदी के उत्थान को संरक्षित करने में विश्व हिंदी सचिवालय की विभिन्न उपलब्धियों के उदाहरण दिए। उन्होंने कहा कि "यह गर्व की बात है कि मॉरीशस में कविता न केवल पढ़ाई जाती है, बल्कि लिखी भी जाती है।

मॉरीशसीय लेखक हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने हेतु कार्य कर रहे हैं और उन्हें मॉरीशस के साथ-साथ अन्य देशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई है।" श्री रवि मितुक ने यह आशा व्यक्त की कि हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य वैश्वीकरण के इस युग में अपने विकास के चरम पर पहुँचे तथा 20वीं शताब्दी हिंदी शताब्दी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करे।

डॉ. वेद रमण पाण्डेय ने 'कविता की प्रासंगिकता' विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कविता को परिभाषित करते हुए कहा कि "कविता ध्वनि, छंद और लय को मिलाकर लिखी जाती है। वह गतिशील होती है, जो समय के साथ बदलती है। कविता इस पूरे संसार को समग्रता से देखने की एक समग्र दृष्टि देती है।"

अपने स्वागत वक्तव्य में प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित महानुभावों, गण्यमान्य अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों व छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना से जुड़े विभिन्न लोगों का उल्लेख करते हुए उनके संघर्ष पर बात की तथा भाषा और संस्कृति की सुरक्षा पर बल दिया।

गण्यमान्य अतिथियों के वक्तव्य के पश्चात् विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' के तृतीय संस्करण का अतिथियों के हाथों लोकार्पण किया गया। समारोह में 'वैश्विक हिंदी परिवार' नामक अंतरराष्ट्रीय मंच के संयोजक तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी की ओर से 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर एक वीडियो प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम के दौरान महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा हिंदी गान तथा 'हे शार्दे माँ' नृत्य-प्रस्तुति तथा स्वरागिनी स्पिरिचुअल ऑर्केस्त्रा के कलाकारों द्वारा गीत-प्रस्तुति हुई। मंच-संचालन तथा धन्यवाद-ज्ञापन विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संगोष्ठी / वेबिनार / ऑनलाइन गोष्ठी / जयंती

फ़णीश्वरनाथ रेणु की जन्मशतवार्षिकी पर आयोजित संगोष्ठी

18 जनवरी, 2021 को साहित्य अकादेमी द्वारा फ़णीश्वरनाथ रेणु की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य कवि एवं आलोचक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया

और बीज वक्तव्य समालोचक श्री गोपेश्वर सिंह ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक श्री चित्तरंजन मिश्र ने की और स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। स्वागत भाषण में श्री के. श्रीनिवासराव ने कहा कि फ़णीश्वरनाथ रेणु को आज़ादी के बाद का प्रेमचंद कहा जा सकता है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने बताया कि रेणु हिंदी के विलक्षण और अविरल रचनाकर थे। अन्य भारतीय भाषाओं में भी उन जैसे रचनाकार गिने-चुने ही हैं। बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री गोपेश्वर सिंह ने कहा कि रेणु की प्रतिबद्धता सच्चाई के प्रति थी और इसके लिए उन्होंने अपने लोगों की आलोचना करने में कोई चूक नहीं की। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए श्री चित्तरंजन मिश्र ने विचार प्रकट किया कि रेणु ने प्रेमचंद के गाँव से जुड़े यथार्थ को नई दृष्टि ही नहीं दी, बल्कि उसको सम्पूर्णता प्रदान की।

विचार-सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात आलोचक रेवती ने कहा कि रेणु के हृदय में आम जीवन के प्रति प्रेम सम्पूर्ण मात्रा में था और उनको पढ़ते हुए आदमियत पर भरोसा होता है। उन्होंने भाषा के आधार पर रेणु का विवेचन करते हुए उल्लेख किया कि वे इस संदर्भ में कालजयी रचनाकार ठहरते हैं। इस अवसर पर कई आलोचकों ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए फ़णीश्वरनाथ रेणु पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक श्री अनुपम तिवारी ने किया।

साभार : जनता.जनार्दन.कॉम

जयंती-समारोह तथा बाल-कथा एवं लघु-कथा गोष्ठी का आयोजन

11 फ़रवरी, 2021 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा जयंती-समारोह और बाल-कथा एवं लघु-कथा गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मनीषी विद्वान, प्रकाशक और संपादक आचार्य रामलोचन शरण 'बिहारी' की जयंती मनाई गई।

सम्मेलन के साहित्यमंत्री डॉ. भूपेन्द्र कलसी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बिहार में हिंदी साहित्य की कोई भी चर्चा पूरी नहीं हो सकती, जब तक रामलोचन शरण जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा न हो। आधुनिक हिंदी के उन्नयन में उनका योगदान अतुल्य है। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि शरण जी ने हिंदी भाषा के अध्यापन और उन्नयन के समक्ष उपस्थित अनेक अभावों की भी पूर्ति की।

इस अवसर पर आयोजित बाल-कथा तथा लघुकथा गोष्ठी में सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर प्रसाद ने 'वह फिर नहीं आया है', योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने 'रेणु की त्रासदी', राज कुमार प्रेमी ने 'सच्चा प्यार', श्री कुमार अनुपम ने 'बटेसर का दर्द', डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी ने 'साहस', श्री अशोक कुमार ने 'क्या है ज़िंदगी', डॉ. सविता मिश्र मागधी ने 'लस्सी में मिठास', श्री असित नाथ तिवारी ने 'नदी लौटती भी है' तथा श्रीमती कविता कुमारी ने 'सन्नाटे की चादर' शीर्षक से कथा-पाठ किया। मंच का संचालन श्री योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

साभार : डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कवयित्री सम्मेलन

7 मार्च, 2021 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य प्रवाह फ़िलाडेल्फ़िया, अमेरिका की संस्थापक डॉ. मीरा सिंह व अध्यक्ष डॉ. अनीता सिंह द्वारा तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस एवं विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में विश्व महिला दिवस के अवसर पर भव्य कवयित्री सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह के दौरान अमेरिका से वरिष्ठ कवयित्री प्रो. नीलू गुप्त, श्रीमती मधु खरे, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विशाखा ठाकुर आदि ने अपनी कविताओं व गीतों के माध्यम से नारी के सकल अस्तित्व को उजागर किया और उसकी गरिमा पर प्रकाश डाला। वहीं मॉरीशस की वरिष्ठ कवयित्रियाँ श्रीमती सुनीता पाहूजा, श्रीमती कल्पना लालजी, श्रीमती अंजू घरभरन आदि ने नारी के प्रति पुरुष वर्ग की सोच को बदलने की आवश्यकता की ओर संकेत किया।

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कविताओं के माध्यम से नारी को बराबर का हकदार ही नहीं, बल्कि आदरणीय भी माना। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य प्रवाह की संस्थापक डॉ. मीरा सिंह के कहानी-संग्रह 'रिश्तों की अहमियत' का विमोचन किया गया। डॉ. मीरा सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए नारी को नारी के अद्वितीय गुणों को बनाए रखने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनीता सिंह ने किया।

साभार : डॉ. मीरा सिंह का फ़ेसबुक पृष्ठ

'मातृभाषा संरक्षण में महिलाओं की भूमिका' विषयक संगोष्ठी

7 मार्च, 2021 को दिल्ली में हिंदुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'मातृभाषा संरक्षण में महिलाओं

की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी एवं काव्य-पाठ का आयोजन किया गया।

अपने स्वागत वक्तव्य में अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने मातृभाषाओं पर आए खतरे पर चर्चा करते हुए नारी-शक्ति से इसके संरक्षण का अनुरोध किया।

सुश्री मीनू त्रिपाठी ने भी अपने सारगर्भित वक्तव्य में भाषाओं के संरक्षण और हिंदी के पाठक वर्ग को बढ़ाने की बात की। चर्चित लेखिका सुश्री गरिमा संजय ने किसी एक दिन को नारी के लिए संरक्षित करने और लिंग आधारित समाज पर प्रश्न उठाया। हिंदुस्तानी भाषा भारती पत्रिका के संयुक्त संपादक श्री राजकुमार श्रेष्ठ ने भाषाओं के संरक्षण की बात की। कर्नल प्रवीण त्रिपाठी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा सुश्री ममता कुमारी ने काव्य-पाठ किया।

इस महत्वपूर्ण परिचर्चा और काव्य-पाठ में अकादमी के शिक्षक प्रकोष्ठ के सदस्यों और पदाधिकारियों के साथ-साथ दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे लेखकों और कवियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साभार : हिंदुस्तानी भाषा अकादमी का वेबसाइट

हिंदी राइटर्स गिल्ड की मासिक कवि गोष्ठी

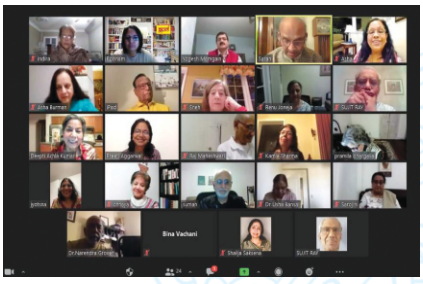

16 मार्च, 2021 को हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा की मासिक गोष्ठी संपन्न हुई। यह 'होली मिलन' का एक विशेष कार्यक्रम था, जिसमें एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

इस अवसर पर 'साहित्य कुंज' के 'फ़िजी विशेषांक' का लोकार्पण किया गया। इसके पश्चात् श्री भगवत शरण श्रीवास्तव, श्री किशोर कांत द्विवेदी, श्रीमती अचला दीप्ति कुमार, श्रीमती इंदिरा वर्मा, श्रीमती उषा रानी बंसल, श्री योगेश ममगाईं, श्रीमती स्नेह सिंघवी, श्रीमती सरोजिनी जौहर, श्री राज माहेश्वरी, श्रीमती आशा मिश्र, श्री सुमन घई, श्री नरेंद्र ग्रोवर, श्रीमती आशा बर्मन, श्रीमती प्रमिला भार्गव, श्रीमती ज्योत्सना अग्रवाल, डॉ. शैलजा सक्सेना, श्रीमती पूनम चंद्रा 'मनु', श्रीमती प्रीति अग्रवाल, श्री सतीश सेठी आदि कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से काव्य के विभिन्न रसों एवं अनेक भावों के रंगों से श्रोताओं को आनंदित किया। श्रीमती प्रीति अग्रवाल ने इस कार्यक्रम का संचालन किया।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड का फ़ेसबुक पृष्ठ

अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

21 मार्च, 2021 को कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन में 'अक्षरवार्ता' अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं कृष्ण बसंती सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था द्वारा 'उदयीमान भारत में शिक्षा, साहित्य, संस्कृति एवं समाज : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. आशीष कंधवे रहे।

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे, विक्रम विश्वविद्यालय के प्रो. एवं डीन श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न हिंदी सेवी श्री इंद्रजीत शर्मा, कार्यक्रम के संयोजक श्री मोहन बैरागी एवं डॉ. आशीष कंधवे ने उद्घाटन सत्र का आरंभ किया।

द्वितीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति, डॉ. अरविंद कुमार पांडे ने की।

शोध-पत्र वाचन सत्र में डॉ. दिलीप कुमार गुप्त, डॉ. रश्मि मिश्र, श्री संजयकुमार मिश्र, पिंकी मंसूरी, डॉ. उमेश अशोक शिंदे, श्री उदित्य सिंह सेंगर आदि ने शोध आलेख प्रस्तुत किया।

डॉ. आशीष कंधवे ने उद्बोधन देते हुए कहा कि उदीयमान भारत का तात्पर्य सूर्य के साथ संवाद करना है तथा शिक्षा के उत्कर्ष पर पहुँचने पर भारत उदीयमान हो जाएगा। उन्होंने भाषा के महत्व को समझने तथा मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल दिया। नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए सजगता के महत्व की भी चर्चा की। उन्होंने सबल राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रतिष्ठा पर प्रकाश डाला और भारत उदय के लिए स्किल इंडिया के प्रति व्यापक स्तर पर संचेतना जागृति की आशा व्यक्त की।

कार्यक्रम के राष्ट्रीय कवि गोष्ठी सत्र में श्री राजकुमार बादल, श्री पार्थ नवीन, श्री राकेश शर्मा, श्री बाबू घायल, श्री बी. एल. बेचैन, श्री कुमार संभव एवं उज्जैन के सिरमौर कवि श्री अशोक भाटी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस सत्र का संचालन श्रीमती तृप्ति मिश्र एवं कवि श्री मोहन बैरागी ने किया। इस संगोष्ठी में देश के अनेक विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों एवं शिक्षकों की प्रतिभागिता रही।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

कवि-सम्मेलन एवं मुशायरा

25 मार्च, 2021 को गांधी सभागार में हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज द्वारा कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन से हुआ। एकेडेमी के अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप सिंह ने कवियों का स्वागत करते हुए कहा कि एकेडेमी हिंदी भाषा के अतिरिक्त उर्दू के विकास के लिए भी सोचती है। हिंदी-उर्दू से देश की एकता

दिखती है तथा हिंदी-उर्दू के प्रयोग से भाषा लचीली हो जाती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि 'अंग्रेज़ी का मुकाबला हिंदी, उर्दू और बोलियों की मिली-जुली भाषा ही कर सकती है।

कवि सम्मेलन एवं मुशायरे में समाज की विसंगतियों पर प्रहार करते हुए कविताएँ एवं शायरी सुनायी गयीं। विशेषकर सामाजिक सरोकारों से रूबरू होते हुए रचनाओं ने विविध रंग उड़ेले। कार्यक्रम का संचालन एम.एस. खान तथा धन्यवाद-ज्ञापन एकेडेमी की कोषाध्यक्षा श्रीमती पायल सिंह ने किया।

साभार : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज का फ़ेसबुक पृष्ठ

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित औपचारिक भेंट का कार्यक्रम

18 फ़रवरी, 2021 को अपराह्न 2 बजे विश्व हिंदी सचिवालय के बोर्ड रूम, फ़ेनिक्स में श्रीमती सुनीता पाहूजा के साथ मॉरीशस के हिंदी साहित्यकारों की औपचारिक भेंट का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव (हिंदी व संस्कृति) श्रीमती सुनीता पाहूजा मुख्य अतिथि थी तथा महात्मा गांधी संस्थान के आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पाण्डेय विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम का संयोजन विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया। औपचारिक भेंट में वरिष्ठ तथा नवोदित लेखक व साहित्यकार श्रीमती कल्पना लालजी, श्रीमती अंजू घरभरन, श्री सूर्यदेव सिबोरत, श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, श्री मोहनलाल जगेसर, श्री विष्णुदत्त मधु, डॉ. कृष्ण कुमार झा, श्रीमती सविता तिवारी, डॉ. अलका धनपत, डॉ. अंजलि चिंतामणि, डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ, डॉ. हेमराज सुंदर, श्रीमती बिद्वंती शम्भु, श्री धनराज शम्भु, श्री बलवंतसिंह नौबतसिंह, श्री मुखलाल लोकमन, डॉ. लालदेव अंचराज, श्री अरविंदसिंह नेकितसिंह, श्री सहलिल तोपासी, श्री वशिष्ठ कुमार झमन तथा श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी बिहारी उपस्थित थे। प्रत्येक प्रतिभागी ने अपना परिचय देते हुए हिंदी तथा सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में अपनी समस्याओं, चुनौतियों एवं संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उक्त कार्यक्रम में सचिवालय के कार्यारंभ दिवस के अवसर पर महामहिम भारतीय उच्चायुक्त द्वारा सुझाए गए पाँच सूत्रीय योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। इस कार्यक्रम को सचिवालय के फ़ेसबुक पेज पर लाइव किया गया, जिससे सैकड़ों हिंदी प्रेमी जुड़े।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष आयोजन

21 फ़रवरी, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पहला कार्यक्रम 'देश में मातृभाषा संरक्षण की चुनौतियाँ' विषय पर आधारित था। डॉ. निर्मलजीत सिंह काल्सी, डॉ. मिला रानी, डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी, प्रो. जी. गोपीनाथ तथा श्री संतोष तनेजा वक्ता रहे तथा श्री राहुल देव का सान्निध्य रहा। संचालन श्री राजेश कुमार ने किया। संयोजक श्री जवाहर कर्नावट, श्री नवेंदु वाजपेयी, श्री विजय मिश्र तथा श्री राजीव कुमार रावत थे। दूसरा कार्यक्रम 'विदेशों में मातृभाषा संरक्षण की चुनौतियाँ' विषय पर आधारित था। डॉ. मिलिंद रानादे, डॉ. ताहिरा नकवी, डॉ. देवेन पटेल तथा श्री अतुल कोठारी वक्ता रहे तथा श्री अनिल जोशी का सान्निध्य रहा। संचालन श्री अनूप भार्गव ने किया तथा संयोजक डॉ. संध्या सिंह थीं।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, भारत सरकार द्वारा द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

23-24 फ़रवरी, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, भारत सरकार (NIOS) के संयुक्त तत्वावधान में 'सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा हिंदी' विषय पर द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्री अतुल कोठारी रहे। स्वागत भाषण प्रो. सरोज शर्मा ने दिया। इस अवसर पर प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने भी अपना उद्बोधन दिया। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. राजीव कुमार सिंह, निदेशक (शैक्षिक), एन.आई.ओ.एस. ने किया। संगोष्ठी को चार सत्रों में बाँटा गया, जिनमें प्रो. वी.के. मल्होत्रा, प्रो. रमेश कुमार पांडेय, प्रो. चंद्र भूषण शर्मा, प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, डॉ. संध्या सिंह, प्रो. शिव कुमार सिंह, श्री अशोक कुमार ओझा, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, डॉ. वंदना मुकेश शर्मा, श्री रोहित कुमार हैप्पी, श्रीमती रेखा राजवंशी, प्रो. उषा शर्मा तथा डॉ. चाँद किरण सलूजा मुख्य वक्ता थे।

24 फ़रवरी को समापन सत्र में प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा प्रो. सरोज शर्मा ने अपना उद्बोधन दिया। समापन भाषण प्रो. रजनीश शुक्ल, कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने दिया। डॉ. बी. के. राय ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। धन्यवाद-ज्ञापन श्री एस.के. प्रसाद, संयुक्त निदेशक, सी.बी.सी./निदेशक (मूल्यांकन), एन.आई.ओ.एस. ने किया।

1500 प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साहित्य संवाद की गोष्ठी

26 फ़रवरी, 2021 को साहित्य संवाद समिति, मॉरीशस द्वारा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा भारतीय उच्चायोग मॉरीशस के सहयोग से इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में साहित्य संवाद की गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में श्रीमती बिद्रंती शंभु कृत 'इंद्रधनुष' पुस्तक पर चर्चा हुई। मुख्य वक्ता स्वयं लेखिका श्रीमती बिद्रंती शंभु रहीं। इस अवसर पर समिति की सचिव श्रीमती अंजू घरभरन, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी मंचस्थ थे। श्रीमती बिद्रंती शंभु ने अपनी कृति 'इंद्रधनुष' के बारे में बताया कि यह संकलन अलग-अलग विधाओं में उनकी रचनाओं का संगम है। इस अवसर पर कुछ छात्रों द्वारा कविता तथा कहानी का पठन भी हुआ। प्रत्यक्ष रूप से 25 लोगों की प्रतिभागिता रही। यह कार्यक्रम सचिवालय के सहयोग से फ़ेसबुक पर पहली बार लाइव किया गया, जिसे 100 से अधिक हिंदी प्रेमियों ने देखा।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

'प्रौद्योगिकी कार्यशाला' एवं 'हिंदी विमर्श' वेब संगोष्ठी

28 फ़रवरी, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पहला कार्यक्रम 'प्रौद्योगिकी कार्यशाला' रही। मुख्य वक्ता श्री बालेंदु शर्मा दाधीच रहे। संचालन श्री अनूप भार्गव ने किया। संयोजक डॉ. संध्या सिंह, श्रीमती श्रद्धा जैन, श्री मोहन बहुगुणा तथा श्री राजीव कुमार रावत थे। इसके पश्चात् दूसरा कार्यक्रम 'हिंदी विमर्श' रहा। डॉ. शीरीन कुर्रेशी, प्रो. उपुल रंजीत तथा श्री विजय कुमार मल्होत्रा वक्ता रहे। संचालन श्रीमती अतिला कोतलावल ने किया तथा श्री अनिल जोशी का सान्निध्य रहा। संयोजक श्री जवाहर कर्नावट थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण अभियान के अंतर्गत कार्यशाला

1 मार्च, 2021 को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण अभियान के अंतर्गत महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सहयोग से वसंत महिला महाविद्यालय (काशी हिंदू विश्वविद्यालय), वाराणसी द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति : भाषा एवं साहित्य शिक्षण के आयाम' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

वेब संगोष्ठी

7 मार्च, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम 1 - विश्व हिंदी शिक्षण विमर्श पर आधारित था तथा कार्यक्रम 2 - भाषा विमर्श - हिंदी विद्वानों और साहित्यकारों की स्मृतियों के संरक्षण के लिए रोड मैप पर आधारित था।

संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुआ तथा वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब पर लाइव स्ट्रीम हुआ। 100 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

वेब संगोष्ठी

14 मार्च, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रथम सत्र साहित्य चर्चा पर आधारित था, जिसका विषय था 'लघु कथा का विशाल संसार'। अतिथि वक्ता के रूप में लघु कथा शोध केन्द्र, भोपाल के निदेशक श्री कान्ताराय, लघु कथाकार श्री जगदीश व्योम तथा दैनिक उज्जैन सांदीपनि के संपादक श्री देवेन्द्र जोशी उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र भाषा विमर्श पर आधारित था, जिसका विषय था 'साहित्यकार कल्याण निधि'। अतिथि वक्ता के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला के सचिव श्री करम सिंह, वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद् श्री राहुल देव तथा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी उपस्थित थे।

संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब पर लाइव स्ट्रीम हुआ। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साहित्य संवाद गोष्ठी

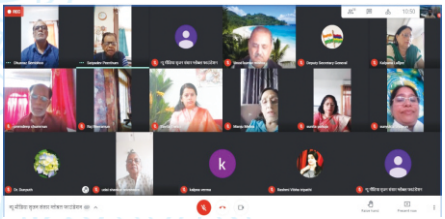

14 मार्च, 2021 को मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, साहित्य संवाद समिति, विश्व हिंदी सचिवालय, सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता के उद्गार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मॉरीशस में लॉकडाउन के चलते यह निर्णय लिया गया कि मार्च माह

की साहित्य संवाद गोष्ठी ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। कार्यक्रम गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुआ, जिसमें 200 से अधिक लोगों ने ऑनलाइन भाग लिया। प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्रीमती कल्पना लालजी, श्री सत्यदेव प्रीतम, डॉ. अलका धनपत, श्री धनराज शम्भु, श्री प्रेमदीप चमन, श्री राज हीरामन, श्रीमती सुनीता पाहूजा तथा डॉ. शैलेश शुक्ल अतिथि वक्ता रहे। श्रीमती अंजू घरभरन ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया तथा डॉ. शैलेश शुक्ल ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

वेब संगोष्ठी

21 मार्च, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र साहित्य विमर्श पर आधारित रहा, जिसके अंतर्गत 'आत्मीय वार्तालाप' रखा गया। अतिथि साहित्यकार के रूप में प्रख्यात हिंदी साहित्यकार व साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता डॉ. अनामिका रहीं तथा साक्षात्कारकर्ता इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, दिल्ली में सह-आचार्य श्रीमती रेखा सेठी रहीं। कार्यक्रम में श्री अनिल जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, भारत सरकार का सान्निध्य रहा।

द्वितीय सत्र भाषा विमर्श पर आधारित रहा, जिसके अंतर्गत 'आत्मीय वार्तालाप' रखा गया। अतिथि विद्वान के रूप में भाषा रिसर्च एंड पब्लिकेशन सेंटर के संस्थापक पद्मश्री डॉ. गणेश एन. देवी उपस्थित थे। कार्यक्रम के साक्षात्कारकर्ता हिंदी भवन, भोपाल के निदेशक डॉ. जवाहर कर्नावट रहे तथा वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद् श्री राहुल देव का सान्निध्य रहा।

संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब पर लाइव स्ट्रीम हुई। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी टंकण कार्यशाला

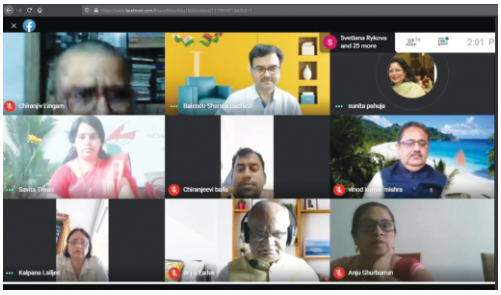

26 मार्च, 2021 को भारतमॉरीशस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस तथा विश्व हिंदी सचिवालय के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी टंकण कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया, जो गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुआ और विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर भी लाइव स्ट्रीम हुआ। श्रीमती सविता तिवारी, संस्थापक भारतमॉरीशस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यशाला के विशेषज्ञ श्री बालेंदु शर्मा दाधीच रहे। प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यशाला में युनिकोड तथा इंस्क्रिप्ट में टंकण की विधियाँ सिखाई गईं। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

26 मार्च, 2021 को माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, खण्डवा, मध्य प्रदेश द्वारा विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार 'वैश्विक परिदृश्य और भारत' विषय पर आधारित रहा। इस कार्यक्रम में विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

27-28 मार्च, 2021 को सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'लोक भाषा और लोक संस्कृति' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. नितीन करमलकर रहे तथा प्रो. विनोद कुमार मिश्र प्रमुख अतिथि रहे। बीज वक्ता प्रो. डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल रहे, स्वागत एवं परिचय प्रो. सदानंद भोसले तथा डॉ. शैलेश शुक्ल ने दिया तथा संगोष्ठी की भूमिका डॉ. राजेंद्र घोडे ने प्रस्तुत किया। सूत्रसंचालन डॉ. जयराम गाडेकर तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. शशिकला राय ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. वेद रमण पाण्डेय ने की तथा विशेष वक्ता डॉ. मृदुल कीर्ति, डॉ. स्नेह ठाकुर, डॉ. शैलेश शुक्ल तथा डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल रहे। सूत्रसंचालन डॉ. महेश दवंगे तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. विजयकुमार रोडे ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. डॉ. अब्दुल अलीम ने की तथा विशेष वक्ता जयचंद्रन आर, प्रो. अरुण होता, डॉ. हनुमंत चोपडेकर, प्रो. जीवनसिंह तथा प्रो. मनोहर जाधव रहे। सूत्रसंचालन डॉ. राजेंद्र घोडे व डॉ. नितीन तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. सदानंद भोसले ने किया।

कार्यक्रम गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुआ तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया के फ़ेसबुक पृष्ठ पर लाइव स्ट्रीम हुआ। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साहित्य संवाद गोष्ठी : होली महोत्सव काव्यपाठ

29 मार्च, 2021 को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, साहित्य संवाद समिति, विश्व हिंदी सचिवालय व सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में होली महोत्सव काव्यपाठ का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यक्रम गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुआ। प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा अपनी कविता भी सुनाई। मॉरीशसीय तथा भारतीय कवियों ने इस कार्यक्रम में काव्यपाठ किया। श्रीमती सुनीता पाहूजा, श्रीमती अंजू घरभरन, डॉ. शैलेश शुक्ल, श्रीमती कल्पना लालजी, डॉ. सुरीति रघुनंदन, श्रीमती सविता तिवारी, श्री नन्दलाल मणि त्रिपाठी, प्रो. सदानंद भोसले, श्री वशिष्ठ कुमार झमन, श्री अरविंदसिंह नेकितसिंह, श्रीमती अंजलि हजगैबी बिहारी, श्री सहलिल तोपासी तथा श्री कविराज बाबू ने अपनी-अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। श्री प्रमोद समझू तथा उनकी टोली ने होली चौताल प्रस्तुत किया। श्रीमती अंजू घरभरन ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया तथा डॉ. शैलेश शुक्ल ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम विश्व हिंदी सचिवालय, सृजन ऑस्ट्रेलिया तथा भारतीय उच्चायोग के फ़ेसबुक पृष्ठ पर लाइव स्ट्रीम हुआ। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

'घरेलू हिंसा : एक अपराध' का लोकार्पण

17 मार्च, 2021 को गुजरात भवन, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली के सभागार में डॉ. राजुल देसाई द्वारा लिखी गई पुस्तक 'घरेलू हिंसा एक अपराध' का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री सी.आर पाटिल और विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती रेखा शर्मा उपस्थित थी। समारोह के दौरान पुस्तक के विषय-वस्तु पर गहन चिंतन-मंथन हुआ।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती रेखा शर्मा ने अपने उद्बोधन के माध्यम से कहा कि इस महत्वपूर्ण विषय पर पुस्तक लिखकर डॉ. राजू देसाई ने स्त्रियों के प्रति अपनी सद्भावना और जागृति को शब्द दे दिया है। सांसद माननीय श्री सी. आर. पाटिल ने इस अवसर पर कहा कि भारत को सशक्त बनाना है, तो स्त्रियों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना होगा तथा उनको रोज़गार से जोड़ना होगा।

डॉ. आशीष कंधवे ने महिलाओं की समस्याओं के कुछ अन्य बिंदुओं की ओर उपस्थित सभासदों का ध्यान आकर्षित किया और कहा कि समाज की मूल चेतना और सामर्थ्य को स्त्रियाँ ही परिभाषित करती हैं। यही राष्ट्र की मूल चेतना है और यही स्त्री सशक्तीकरण है।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

'सिसकियाँ' नाटक का लोकार्पण

2 जनवरी, 2021 को कौशांबी स्थित राजपथ रेज़िडेंसी होटल में 'उद्भव' सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था के तत्वावधान में श्री कृष्ण कुमार वर्मा के नाटक 'सिसकियाँ' का लोकार्पण संपन्न हुआ।

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार श्रीमान बी.एल. गौड़ उपस्थित रहे तथा विशिष्ट अतिथियों में प्रवासी संसार पत्रिका के संपादक-लेखक डॉ. राकेश पांडेय और शिक्षाविद् श्री तिलक राज वर्मा की उपस्थिति रही। समारोह का संचालन 'उद्भव' संस्था के अध्यक्ष डॉ. विवेक गौतम ने किया।

साभार : डॉ. विवेक गौतम का फ़ेसबुक पृष्ठ

'धनंजय' उपन्यास का लोकार्पण

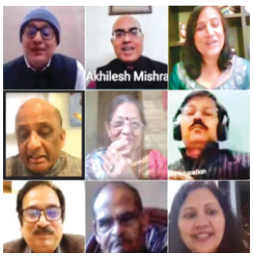

16 जनवरी, 2021 को सिंगापुर की 'कविताई', भारत का 'सोपान' और अमेरिका की 'झिलमिल' संस्थाओं के तत्वावधान में एक ऑनलाइन कार्यक्रम किया गया, जिसमें श्री प्रताप नारायण सिंह के उपन्यास 'धनंजय' का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि संस्कृत और हिंदी साहित्य के ज्ञाता तथा विदेश मंत्रालय में अपर सचिव एम्बेसडर श्री अखिलेश मिश्र रहे। इस कार्यक्रम में आयोजित 'धनंजय अंतरराष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता' के परिणाम घोषित किए गए और विजेता कवियों ने काव्य-पाठ किया। श्री अखिलेश मिश्र ने आज के संदर्भ में 'धनंजय' उपन्यास की महत्ता पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रणव भारती ने पुस्तक की समीक्षा के साथ-साथ उपन्यास-लेखन में ध्यान देनेवाली बातों पर भी बात की। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन 'कविताई' से श्रीमती शार्दुला नोगजा ने किया।

साभार : 'कविताई', सिंगापुर का फ़ेसबुक पृष्ठ

काव्य-संग्रह 'पारस-परस' का लोकार्पण

22 जनवरी, 2021 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में डॉ. गोपाल निर्दोष की पाँचवीं पुस्तक 'पारस-परस' काव्य-संग्रह का लोकार्पण किया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ. भूपेन्द्र कलसी ने कहा कि 'पारस- परस' के रूप में बड़े दिनों के बाद एक पठनीय पुस्तक हाथ में आयी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि कवि डॉ. गोपाल निर्दोष काव्य-कल्पनाओं और कवित्त-शक्ति से युक्त एक प्रतिभाशाली कवि हैं। इनका शब्द-संयोजन एवं संप्रेषण -सामर्थ्य महनीय है।

इस अवसर पर डॉ. गोपाल निर्दोष ने 'पारस-परस' की दो कविताओं 'पानी पानी आँखें' एवं 'मज़दूर' का पाठ करते हुए अपनी अनवरत

रचनाशीलता से अपने ज़िले नवादा को हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान दिलाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दुहराई। इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में दर्जनों कवियों ने 'पारस-परस' की ही कविताओं को महत्वपूर्ण, सारगर्भित एवं विशिष्ट बताते हुए उसी का पाठ किया। ज़िले के युवा साहित्यकार श्री सावन कुमार ने अपनी कविता 'मैं पीड़ा हूँ' की प्रस्तुति की। समारोह में अनेक साहित्यकार व अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : स्वत्व समाचार.कॉम

पुस्तक 'ज़िंदगी का बोनस' का लोकार्पण

24 फ़रवरी, 2021 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में डॉ. सच्चिदानंद जोशी द्वारा लिखित पुस्तक 'जिंदगी का बोनस' का लोकार्पण किया गया। प्रभात प्रकाशन से श्री प्रभात कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अशोक चक्रधर ने कहा कि इस किताब की हर कहानी मुझे मेरी कहानियों की याद दिलाती हैं। यह कहानी-संग्रह अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने का प्रयास है। प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती अल्पना मिश्र विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थी। पुस्तक पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा "रचनाकार की रचना के माध्यम से उसकी संवेदनाएँ पाठक तक वैसे ही पहुँचे, जैसे लेखक अनुभव कर रहा है, तो यह लेखक की बड़ी सफलता होती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता देश की सुप्रसिद्ध कथक नृत्यांगना डॉ. शोवना नारायण ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि "सच्चिदानंद जी की कहानियों में उनके आस-पास घटित सामान्य घटनाओं के प्रति गूढ़ चिंतन-मनन स्पष्ट दिखता है। इन आम घटनाओं से उन्होंने जो सीख व निष्कर्ष निकाला, वो बहुत महत्वपूर्ण है। अब पाठकों का काम है कि वे इससे क्या सीख लेते हैं।" भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा "यह कहानी-संग्रह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जिनके पास समय कम है। ये छोटी-छोटी कहानियाँ अपने आप में बड़ा सबक लिए हैं।" पुस्तक के लेखक डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने पुस्तक परिचय देते हुए कहा कि 'ज़िंदगी का बोनस' जीवन के कुछ ऐसे अनोखे पलों का दस्तावेज़ है, जो अनायास आपकी झोली में आ गिरते हैं, फिर आपकी स्थायी निधि बन जाते हैं। धन्यवाद-ज्ञापन श्रीमती मालविका जोशी ने किया।

साभार : पाञ्चजन्य.कॉम

काव्य-संग्रह 'आ जी लें ज़रा' का लोकार्पण

2 जनवरी, 2021 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा कवि प्रमोद राजपूत के काव्य-संग्रह 'आ जी लें ज़रा' का लोकार्पण तथा कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन बिहार के सहकारिता मंत्री माननीय श्री राणा रणधीर ने किया।

सांसद श्री रामनाथ ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत डॉ. नागेन्द्र पाठक ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अनिल सुलभ ने लोकार्पित पुस्तक के कवि श्री प्रमोद राजपूत की काव्य–प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए कहा कि भौतिक लिप्सा में अंध–लिप्त अमेरिकी संस्कृति में श्री राजपूत ने हिंदी और काव्य की संस्कृति को जगाए रखा है, यह बहुत बड़ी बात है। इनकी कविताएँ न केवल आत्मीय–संवेदनाओं से परिपूर्ण हैं, बल्कि इनमें काव्य–कला का सौंदर्य भी मुखर हुआ है। ये मन की पीड़ा की कलात्मक प्रस्तुति तो करते ही हैं, जीवन की मूल समस्याओं की ओर भी ध्यान खींचते हैं। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में कवियों ने काव्य-पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन महासचिव श्री आनंद किशोर मिश्र तथा धन्यवाद–ज्ञापन श्री योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने किया।

साभार : कॉन्ट्री इन्साइड न्यूज़.कॉम

पुरस्कार एवं सम्मान

अंतरराष्ट्रीय वातायन सम्मान समारोह

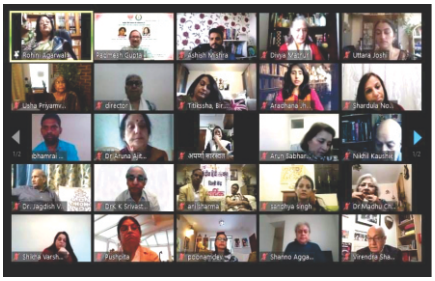

20 मार्च, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में आभासी मंच पर वातायन के अंतरराष्ट्रीय वार्षिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के अंतर्गत प्रख्यात लेखिका और विस्कांसिन विश्वविद्यालय-मैडीसन में दक्षिण-एशियाई विभाग की प्रोफ़ेसर रह चुकी प्रतिष्ठित लेखिका श्रीमती उषा प्रियंवदा को 'वातायन शिखर सम्मान' (लाइफ़-टाइम अचीवमेंट) और जानी-मानी उद्घोषिका और लोकप्रिय लेखिका डॉ. अलका सिन्हा को 'अंतरराष्ट्रीय वातायन साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

ब्रिटिश मूल की लोकप्रिय गायिका श्रीमती उत्तरा सुकन्या जोशी ने सरस्वती वंदना से समारोह का आरंभ किया, जिसके बाद भारत के शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का संदेश प्रसारित किया गया, जिसमें पुरस्कृत लेखकों को बधाई देने के साथ-साथ उन्होंने विदेशों में हिंदी के संवर्धन के लिए वातायन की सराहना की।

डॉ. पद्मेश गुप्त ने 2003 में स्थापित वातायन की गतिविधियों पर एक पावरपोंइंट भी प्रस्तुत किया। वातायन की अध्यक्षा और समकालीन प्रदर्शनों की निर्माता/निर्देशक श्रीमती मीरा मिश्रा-कौशिक, ओबीई ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि वातायन ने पिछले 18 वर्षों में साहित्य और संस्कृति में लगे अंतरराष्ट्रीय लेखकों और कला-उत्साही लोगों को एक मज़बूत मंच प्रदान किया है।

श्री अनिल शर्मा जोशी और प्रतिष्ठित लेखिका और समीक्षक डॉ. रोहिणी अग्रवाल ने पुरस्कृत लेखिकाओं के साहित्य और उपलब्धियों पर अतुलनीय वक्तव्य प्रस्तुत किए।

एक ओर जहाँ श्रीमती उषा प्रियंवदा की अथक रचनात्मकता और आत्मीयता ने श्रोताओं को प्रभावित किया, दूसरी ओर डॉ. अलका सिन्हा के वक्तव्य की सकारात्मकता और स्पष्ट दृष्टिकोण सभी के लिए प्रेरणादायी रहा। पुरस्कृत लेखकों को बधाई देते हुए ब्रिटिश सांसद माननीय श्री वीरेंद्र शर्मा ने भी वातायन की नियमित और सार्थक गतिविधियों की सराहना की।

इस अवसर पर ब्रिटिश सांसद श्री वीरेंद्र शर्मा, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल-आगरा के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी, प्रतिष्ठित लेखिका और समीक्षक डॉ. रोहिणी अग्रवाल, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल-आगरा से डॉ. बीना शर्मा, वातायन-यू.के. की संस्थापक सुश्री दिव्या माथुर और अध्यक्षा श्रीमती मीरा मिश्रा-कौशिक, ओबीई की प्रतिभागिता रही। यू.के. हिंदी समिति के संस्थापक और ऑक्सफ़ोर्ड बिज़नेस कॉलिज के निदेशक डॉ. पद्मेश गुप्त ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साभार : सुश्री दिव्या माथुर का फ़ेसबुक पृष्ठ

वरिष्ठ कथाकार श्री रणेन्द्र को 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान'

31 जनवरी, 2021 को राँची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में वरिष्ठ कथाकार श्री रणेन्द्र को वर्ष 2020 के लिए 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान' से अलंकृत किया गया। आप आदिवासी जीवन को अपनी लेखनी का विषय बनाने वाले लेखकों में से एक हैं तथा वैश्वीकरण एवं विकास के प्रभावों के द्रष्टा और अन्वेषक भी रहे हैं।

आपकी रचनाओं में 'ग्लोबल गाँव के देवता', 'गूंगी रुलाई का कोरस' तथा 'गायब होता देश' शीर्षक उपन्यास, आदिवासी समुदाय 'मुंडा' के जीवन संघर्ष, 'छप्पन छुरी बहत्तर पेंच' और 'रात बाकी और कहानियाँ' जैसे कहानी-संग्रह शामिल हैं।

सम्मान समिति के अध्यक्ष प्रो. नित्यानंद तिवारी ने श्री रणेन्द्र को रेणु की परंपरा का लेखक बताते हुए 'ग्लोबल गाँव के देवता' को गोदान, मैला आँचल की परंपरा का उपन्यास माना। उन्होंने कहा कि यह उपन्यास मैला आंचल के बाद ग्रामीण और किसानी जीवन का सबसे प्रामाणिक चित्रण करता है।

समारोह का संचालन मो. इरफ़ान ने किया। समारोह में राँची विश्वविद्यालय, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय और झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्र-शिक्षक सहित शहर के साहित्यकार और साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति रही।

साभार : समकालीन जनमत.इन

कवयित्री सम्मेलन एवं सम्मान समारोह

8 फ़रवरी, 2021 को बिहार साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित कवयित्री सम्मेलन के अवसर पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'सुभद्रा कुमारी चौहान बाल साहित्य सम्मान' के लिए चयनित कवयित्री किरण सिंह को सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ द्वारा सम्मानित किया गया।

समारोह का आरंभ श्रीमती चंदा मिश्र की वाणी में वंदना से हुई। सम्मेलन की उपाध्यक्ष डॉ. मधु वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित कवयित्री-सम्मेलन में 40 से अधिक कवयित्रियों ने गीत-ग़ज़लों का पाठ किया। मंच-संचालन डॉ. त्रिपाठी ने किया।

साभार : बिहार साहित्य सम्मेलन का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्रद्धांजलि

प्रो. वशिनी शर्मा

2 जनवरी, 2021 को सौम्य, शालीन और हिंदी के प्रति समर्पित और निष्ठावान विदुषी प्रो. वशिनी शर्मा का 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 20 नवंबर, 1944 को हल्लीखेड, कर्नाटक में हुआ था। आपने हिंदी तथा भाषा विज्ञान में एम.ए. तथा अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप अध्यापन के क्षेत्र में लगभग 40 वर्ष कार्यरत थीं तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की पूर्व प्रोफ़ेसर रह चुकी हैं। आप संस्थान में शिक्षा विभाग, विदेशी विभाग और भाषा प्रौद्योगिकी विभाग की अध्यक्षा भी रही हैं।

आपने कॉर्नेल विश्वविद्यालय के लिए युनिवर्सल्स ओफ़ चाइल्ड लेंग्वेजज़, अमेरिका के व्हार्टन स्कूल के लिए बिज़नेस हिंदी तथा अंतरराष्ट्रीय मानक हिंदी पाठ्यक्रम जैसी परियोजनाओं पर कार्य किया है।

आपने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा प्रकाशित 'अंग्रेज़ी-हिंदी अभिव्यक्ति कोश' पर कार्य किया है। संस्थान द्वारा प्रकाशित 'विश्व भाषा हिंदी' तथा 'गवेषणा संचयन' का संपादन तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा प्रकाशित 'प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी' का सह-संपादन किया है। आप हिंदी शिक्षक बंधु गूगल समूह की एडमिन थीं।

साभार : विश्व हिंदी सचिवालय का डेटाबेस

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat,
Independence Street,
Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
इ-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट: www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक पृष्ठ: www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर: @WorldHindiSecr1

संपादकीय

हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति की विश्व-यात्रा

हिंदी भाषा का उद्गम-स्थान भारत है। ब्रिटिश शासन के अंतर्गत लॉर्ड मैकाले ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में यह उद्गार व्यक्त किया कि अंग्रेज़ यदि भारत को अपने वश में करना चाहते हैं, तो उन्हें इस देश की भाषा और संस्कृति दोनों को ही नष्ट करना होगा। भारतीय संस्कृति एवं भारत की भाषाओं को जड़ से उखाड़ने के लिए लॉर्ड मैकाले ने भयंकर षड्यंत्र रचा, जिसके दुष्परिणामों के प्रति सजग और सचेष्ट होकर भारतीय विद्वानों ने देशवासियों में यह संचेतना जगायी कि

"जहाँ भाषा नहीं, वहाँ संस्कृति नहीं और जहाँ संस्कृति नहीं, वहाँ न वर्तमान है और नाही भविष्य।"

भारत में समर्पित समाज-सेवियों और निष्ठावान् साहित्यकारों ने सांस्कृतिक जागरण के माध्यम से भाषा और संस्कृति के संरक्षण का भगीरथ प्रयास किया। उन्नीसवीं शताब्दी में असंख्य शर्तबंद मज़दूर भारत से मॉरीशस, फ़िजी, गयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ़्रीका आदि ब्रिटिश उपनिवेशों में बेहतर जीवन की तलाश करने गए। अनजान भूमि में पहुँचते ही उन्होंने अनुभव किया कि भाषा और संस्कृति को विस्मृत करना अपने अस्तित्व को मिटाने तुल्य होगा। अस्तित्व की रक्षा हेतु भारतीय आप्रवासियों ने भाषा-संस्कृति को सुरक्षित रखना अपना प्रधान दायित्व माना। दायित्व-निर्वहन करने के उद्देश्य से 'बैठका' नामक सायंकालीन अथवा सप्ताहांत हिंदी पाठशालाएँ आरम्भ की गयीं। हिंदी भाषा का संरक्षण करने का भारी संघर्ष फलीभूत हुआ, तो किसी एक देश में हिंदी का अध्ययन व अध्यापन सरकारी पाठशालाओं में होने लगा, तो दूसरे देश में हिंदी भाषा विश्वविद्यालयी स्तर पर पढ़ाई जाने लगी। यह ध्यातव्य है कि शिक्षकों ने हिंदी पढ़ाने के साथ भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों से विद्यार्थियों को परिचित कराया। जिस देश में भी हिंदी के ज्ञान में वृद्धि हुई, वहाँ भारतीय विचारधारा, खान-पान, पोशाक, रहन-सहन, रीति-रिवाज़ आदि का प्रचलन हुआ। साथ ही वेद, उपनिषद्, रामायण, गीता जैसे प्राचीन धर्मग्रंथों का ज्ञान भी विकसित हुआ।

ग्लोब का उत्तर हो या दक्षिण, पूरब हो, पश्चिम हो या मध्य क्षेत्र हो, जहाँ भी वर्तमान समय में हिंदी में व्यवहार किया जाता है, वहाँ 'लघु भारत' का जीवंत दृश्य अवश्य दिखाई देता है। हिंदी भाषा से संबंधित कोई भी समारोह हो, चाहे हिंदी पाठशाला का वार्षिकोत्सव या हिंदी दिवस या विश्व हिंदी दिवस अथवा विश्व हिंदी सम्मेलन, हिंदी के प्रत्येक उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम का समावेश अवश्य होता है। इन कार्यक्रमों में भारतीय संगीत एवं नृत्य का आनंद उठाने के लिए हिंदी की समझ न रखने वाले अहिंदी भाषी भी एकत्रित हो जाते हैं। आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में जब संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय के मुख्य सभागार में हिंदी का ध्वज ऊँचा फहराया गया था, तब हिंदी भाषा के साथ भारतीय संस्कृति का गौरव भी बढ़ा था। विश्व में हिंदी भाषा के ज्ञान के विस्तार के साथ ही भारतीय संस्कृति भी विश्व-यात्रा में अग्रसित होती रही। यह भी सत्य है कि विश्व के कई देशों में अहिंदी भाषी भारत को जानने और भारतीय संस्कृति को समझने के लक्ष्य से हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित हुए। बेलारूस की सुश्री आलेसिया माकोव्सकाया जी का उदाहरण उल्लेखनीय है। बचपन में 'आवारा' फ़िल्म देखने के बाद सुश्री आलेसिया माकोव्सकाया जी भारतीयता से इतना प्रभावित हुईं कि उनका मन भारतीय संस्कृति के प्रति खींचता गया। 'बेलारूस में मेरी हिंदी : बचकानी अभिरुचि से लेकर व्यावसायिक कार्य तक' शीर्षक से प्रकाशित अपने एक आलेख में वे लिखती हैं –

"मुझमें इस मनोहर देश की संस्कृति का अध्ययन करने की इच्छा हुई। लेकिन मैं समझती थी कि मैं हिंदी भाषा का अध्ययन किए बिना भारत की संस्कृति का पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाऊँगी।"

अर्थात् भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने के प्रयोजन से ही सुश्री आलेस्या माकोव्सकाया ने हिंदी भाषा का अध्ययन किया। भारत के केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में हिंदी का अध्ययन करने वाले विदेशी छात्रों से जब हिंदी सीखने के उनके उद्देश्य के बारे में प्रश्न किया जाता है, तब अधिकांश विद्यार्थी यही उत्तर देते हैं कि भारत और भारतीय संस्कृति के प्रति गहन आकर्षण के फलस्वरूप वे हिंदी अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए।

विश्व के अधिक-से-अधिक देशों के साथ भारत का मैत्री सम्बन्ध सशक्त होता जा रहा है। परिणामस्वरूप, विदेशियों को हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति से जुड़ने का प्रोत्साहन बढ़ता जा रहा है। अमेरिका और यूरोपीय देशों के कर्णधार भी अपनी जनता को हिंदी की महत्ता से अवगत करा रहे हैं और हिंदी का प्रारंभिक ज्ञान देने वाली पुस्तकों को भारत से मंगवा रहे हैं अथवा अपने ही देश में तैयार करवा रहे हैं। हिंदी और भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार को सुन्दर मोड़ प्रदान करने में भारत सरकार, विदेश मंत्रालय भारत, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् और विश्व हिंदी सचिवालय समन्वित रूप से कार्यरत हैं।

व्यापार अथवा व्यवसाय करने के लिए या किसी भी अन्य कारण से असंख्य भारतीय विदेशों में प्रवास कर रहे हैं। जो प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा व साहित्य के उन्नयन के प्रति पूर्णत: समर्पित हैं, वे अपने जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से भारतीय संस्कृति के जीवंत स्वरूप के दर्शन कराते हैं। कनाडा से श्रीमती स्नेह ठाकुर जी "हिंदी, मेरी प्रिय हिंदी" विषयक अपने लेख में निम्नांकित उद्गार प्रकट करती हैं –

"वर्षों से मुझे प्रवासी या आप्रवासी शब्द खटकता रहा, हृदय में शूल की भांति चुभता रहा। जैसे किसी ने मुझे निर्वासित कर दिया हो। मैं कहीं भी रहूँ, भारतीय तो हूँ ही। उस भारतीयता का अंग अपने से कैसे काट सकती हूँ और साथ ही किसी दूसरे को भी उस भारतीयता के अंग को मुझसे काटने का अधिकार कैसे दे सकती हूँ?...जो भी व्यक्ति भारत से बाहर गए हैं, चाहे वे किन्हीं कारणों से गए हैं, तो वे भारतीय हैं। भारत की मिट्टी ने ही उन्हें इस योग्य बनाया है कि वे धरती के किसी भी छोड़ पर गर्व से सिर उठाकर कह सके कि हम भारतीय हैं, भारतवंशी हैं।"

उपर्युक्त उदात्त विचारधारा से युक्त भारतीय यद्यपि धरती के किसी भी भाग को अपना निवास-स्थान बना लें, तथापि हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को आजीवन साथ लेकर चलने के कारण वे भारतीयता की अपनी अमिट पहचान को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करते रहेंगे।

हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति सहयात्री बनकर ही भारत से विश्व की यात्रा करने के लिए निकलीं। हिंदी भाषा की प्रभा से विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रसार होता रहेगा और भारतीय संस्कृति के प्रभाव से हिंदी भाषा की शक्ति में निश्चय ही वृद्धि होगी। भारतीय संस्कृति का वैश्विक विस्तार करने के लिए हिंदी भाषा की मशाल को श्रद्धा-भाव से जलाए रखना है।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव